संगम

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान रोपड़ की हिंदी अर्धवार्षिक पत्रिका

जनवरी–जून 2020

मुद्रण संस्करण 02 अंक 01

निदेशक का संदेश

प्रिय मित्रों,

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान रोपड़ की "संगम" हिंदी पत्रिका के मुद्रण संस्करण 02 अंक 01 को आप सभी पाठकों को समर्पित करते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है। वर्ष 2020 हम सभी के लिए एक बड़ी चुनौती लेकर आया है। कोविद 19 ने जहां हम सभी के लिए गंभीर चुनौतियां पैदा की वहीं हम सभी के द्वारा इस गंभीर आपदा के विरुद्ध लड़ने की एकजूटता देखते ही बनाती है। कोविद 19 के इस आपदा समय में हम सभी ने अपनी बंधुत्व भावना का सफलतापूर्वक परिचय दिया है और साथ ही हर एक ने सामाजिक दूरी बनाएं रखते हुए इस समाज के प्रति अपने दायित्व का कुशल निर्वहन भी किया है।

एक शैक्षणिक संस्थान होने के नाते भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान रोपड़ ने इस आपदा के समय अपनी शैक्षणिक गतिविधियों और अनुसंधान द्वारा एक राष्ट्रीय महत्व के संस्थान होने का समय समय पर परिचय दिया है। भा.प्रौ. सं. रोपड़ में पिछले सेमिस्टर में साढ़े तीन हजार आनलाइन कक्षाओं का संचालन किया है, साथ ही आनलाईन परीक्षाओं का भी सुचारु रुप से संचालन किया है। इस त्रासदी का समय में भा.प्रौ.सं. रोपड़ ने अपने अभिनव प्रयासों से अपने सभी क्रियाकलापों का सफलतापूर्वक संचालन किया है जिसकी मुझे बेहद खुशी है।

एक शैक्षणिक संस्थान, एक राष्ट्रीय महत्व का संस्थान होने के नाते भा.प्रौ.सं. रोपड़ अपने आरंभ से राष्ट्र की उन्नति को ध्यान में रखते हुए अपनी सेवाएं प्रदान करता आ रहा है। इसी क्रम में कोविद 19 के संक्रमण और इसके रोकथाम को दृष्टि में रखते हुए हमारे संस्थान ने कई प्रकार के अनुसंधान द्वारा स्वास्थ्य संबंधि उपकरणों , यंत्रों का निर्माण किया है। जिसमें प्रमुखता से रासायनिक कीटाणुनाशक, यूव्हीजीआई प्रौद्योगिकी और नकारात्मक दबाव कक्ष प्रौद्योगिकी का उपयोग कर डोफिंग स्टेशन (अपनयन केन्द्र) का निर्माण करना है। किराने का सामान, सब्जियां, पैकेज और व्यक्तिगत सामान को निर्जीवाणुकरण करने हेतु यूव्ही–सी निर्जीवाणुकरण विकिरण तकनीक पर आधारित सैनिटाईजिंग डिवाइस (स्वच्छता उपकरण) का निर्माण जो कि ट्रंक के रुप में है। यह ट्रंक निर्माण करने की दृष्टि से सरल और संचालन की दृष्टि से सुविधाजनक है। भा.प्रौ. सं. रोपड़ ने एकांत कक्ष और स्वास्थ्य परीक्षण प्रयोगशालाओं में हवा के माध्यम से कोविद–19 के संचरण को रोकने के लिए एक निगेटिव्ह प्रेशर रुम (एनपीआर) का एक डिजाइन विकसित किया है, यह निगेटिव प्रेशर रुम की तकनीक की सहायता से चिकित्सा कर्मचारियों को संक्रमण से बचाया जा सकता है।

भा.प्रौ.सं. रोपड़ ने कोविद 19 को के बढ़ते संक्रमण को केन्द्र में रखते हुए बुद्धिमत्ता अवरक्त दृष्टि प्रणाली (प्दजमससपहमदज प्दतिंतमक टपेपवद लेजमउ) का निर्माण किया। बुद्धिमत्ता अवरक्त दृष्टि प्रणाली एक सुवाह्य और किफायती प्रणाली है जो भीड़भाड वाले स्थानों पर मानव हस्तक्षेप के बिना संदिग्धों की पहचान हेतु स्व निर्णयन क्षमता के साथ रिमोट स्क्रीनिंग क्षमताओं के साथ सुरक्षित है।

इसके साथ ही भा.प्रौ.सं. रोपड़ ने स्नातकोत्तर चिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान, चण्डीगढ़ के सहयोग में संक्रमित रोगियों और दूषित परिवेशों के साथ स्वास्थ्य कर्मचारियों के संपर्क को कम करने के उद्देश्य से कोविद 19 रोगियों के लिए मेडी–सारथी और कृत्रिम बुद्धिमत्ता शक्ति चालित ट्रॉली (MEDI & Sarathi and AI Powered Trolley) नामक दो अत्याधुनिक कम लागत स्वायत्त वाहनों का आरंभ किया।

कोविद–19 के दौरान भा.प्रौ.सं. रोपड़ के इन अनुसंधान और विकास प्रयासों को मानव संसाधन मंत्रालय ने ट्विटर और अन्य माध्यमों से जो मान्यता प्रदान की गई है इसके लिए मैं व्यक्तिगत रुप से और संस्थान की ओर से मंत्रालय का धन्यवाद ज्ञापित करता हू और आश्वस्त करना चाहता हू कि भा.प्रौ.सं. रोपड़ आनेवाले समय में अपने अनुसंधान और विकास गतिविधियों के माध्यम से समाज और राष्ट्र के प्रति अपने दायित्व का पूर्ण अत:करण से निर्वहन करेगा।

वर्ष 2020, रैकिंग की दृष्टि से भा.प्रौ.सं. रोपड़ के लिए उत्साहवर्धन का वर्ष रहा है। भा.प्रौ.सं. रोपड़ ने एक बार फिर टाईम्स हायर एज्युकेशन इमर्जिंग इकोनॉमीज यूनिवर्सिटी रैंकिंग 2020 में अपनी छाप छोड़ी है। भा.प्रौ.सं. रोपड़ ने भा.प्रौ.सं. मद्रास के साथ 63 वीं रैंक साझा की और हमारे संस्थान ने पहली बार शीर्ष 100 की सूची में भी प्रवेश किया।

भा.प्रौ.सं. रोपड़ ने टाईम्स हायर एज्युकेशन एशिया यूनिवर्सिटी रैंकिंग 2020 में 47 वें स्थान पर और पहली बार शीर्ष 50 की सूची में प्रवेश किया। एक युवा संस्थान होने के नाते यह उपलब्धि भा.प्रौ.सं. रोपड़ के लिए एक मील का पत्थर साबित होगी।

भा.प्रौ.सं. रोपड़ टाइम्स यंग यूनिवर्सिटी रैंकिंग 2020 में शीर्ष भारतीय संस्थान के रूप में उभरा है। 24 जून, 2020 को यूके में घोषित टाइम्स हायर एजुकेशन यंग यूनिवर्सिटी रैंकिंग 2020 में विश्व के अग्रणी 70 युवा संस्थानों के अंतर्गत 62वां स्थान प्राप्त किया है।

राष्ट्रीय संस्थागत रैंकिंग फ्रेमवर्क द्वारा नवीनतम भारत रैकिंग 2020 में भा.प्रौ.सं. रोपड़ को समग्र श्रेणी में 39 वें स्थान पर रखा गया है और भा.प्रौ.सं. रोपड़ ने अभियांत्रिकी श्रेणी में 25 वां स्थान सुरक्षित कर अपनी उत्तरोत्तर उन्नति का परिचय दिया है।

मुझे इस बात का गर्व है कि भा.प्रौ.सं. रोपड़ ने कोविद –19 की त्रासदी के पहले का समय हो अथवा वर्तमान समय हो, संस्थान ने निरंतर अपने छात्र–छात्राओं के सर्वागीण विकास हेतु हमेशा अपने अभिनव प्रयासों द्वारा उनके उज्जवल भविष्य का मार्ग प्रशस्त किया है।

पत्रिका के निरन्तर प्रकाशन हेतु संम्पादक मण्डल को शुभकामनाएं देता हू जिनके प्रयासों से संस्थान के सदस्यों की रचनात्मक रुचि का विकास हो रहा है।

शुभकामनाओं सहित.....!

टाईम्स हायर एज्यूकेशन इमर्जिंग इकोनोमिक्स यूनिवर्सिटी रैकिंग 2020

द इमर्जिंग इकोनोमिक्स यूनिवर्सिटी रैकिंग 2020 में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान रोपड़ में इस सूची में शीर्ष के 100 संस्थानों में अपना स्थान सुनिश्चित किया।

भा.प्रौ.सं. रोपड़ ने भा.प्रौ.सं. मद्रास के साथ 63वी रैंक साझा की। भा.प्रौ. सं. रोपड़ ने प्रशस्ति पत्र में 100 प्रतिशत स्कोर हासिल करने के साथ ही इस रैकिंग के अनुसार अनुसंधान प्रभाव के संदर्भ में सबसे अग्रणी स्थान प्राप्त कर सूची में शीर्ष संस्थानों में अपनी जगह बनाई है।

भा.प्रौ.सं. रोपड़ विश्व स्तर पर प्रतिस्पर्धा के स्थान स्थानीय रुप से अपनी प्रासंगिकता पर भी कार्य करते हुए अनुसंधान और विकास पोर्टफोलियो का नेतृत्व कर रहा है। भा.प्रौ.सं. रोपड़ अपने इस लक्ष्य का अनुगमन करने की दिशा में संस्थान की अनुसंधान टीमें राष्ट्रीय और अंतराष्ट्रीय शैक्षणिक / अनुसंधान संस्थानों तथा उद्योगों के साथ निरंतर जुड़ रहा है। भा.प्रौ.सं. रोपड़ द्वारा कई बड़ी संख्या में परियोजनाओं का आरंभ किया गया है जो राष्ट्रीय विकास लक्ष्यों एवं प्राथमिकताओं में योगदान देती है।

द इमर्जिंग इकोनोमिक्स यूनिवर्सिटी रैकिग 2020 संकाय, अनुसंधान और प्रशस्ति पत्र, उद्योग आय और अंतरराष्ट्रीय दृष्टिकोण सहित 13 प्रकार के प्रदर्शन के स्तरों पर आधारित है इस सूची में 47 देशों को 533 विश्वविद्यालयों /संस्थानों को स्थान दिया गया है।

टाईम्स हायर एज्यूकेशन एशिया यूनिवर्सिटी रैंकिंग 2020

भा.प्रौ.सं. रोपड़ ने एशिया यूनिवर्सिटी रैंकिंग 2020 में 47 वें स्थान पर और पहली बार शीर्ष 50 की सूची में प्रवेश किया। एक युवा संस्थान के रुप में भा.प्रौ.सं. रोपड़ के लिए यह उपलब्धि भविष्यिक क्रियाकलापों में उर्जा का कारण बनेगी।

टाइम्स यंग यूनिवर्सिटी रैंकिंग 2020

भा.प्रौ.सं. रोपड़ टाइम्स यंग यूनिवर्सिटी रैंकिंग 2020 में शीर्ष भारतीय संस्थान के रूप में उभरा है। भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान रोपड़ ने टाइम्स हायर एजुकेशन यंग यूनिवर्सिटी रैंकिंग 2020 में विश्व के अग्रणी 70 युवा संस्थानों के अंतर्गत 62वां स्थान प्राप्त किया है।

राष्ट्रीय संस्थागत रैंकिंग फ्रेमवर्क

एनआईआरएफ द्वारा नवीनतम भारत रैकिंग 2020 में भा.प्रौ.सं. रोपड़ को समग्र श्रेणी में 39 वें स्थान और अभियांत्रिकी श्रेणी के अंतर्गत 25वां स्थान प्राप्त किया है।

कोविद 19 पर भा.प्रौ.सं. रोपड़ के अनुसंधान

डोफिंग यूनिटः भा.प्रौ.सं. रोपड़ ने स्वास्थ्य कर्मचारियों के लिए डोफिंग स्टेशन का निर्माण किया है, जिसमें प्रमुखता से रासायनिक कीटाणुनाशक, यूव्हीजीआई प्रौद्योगिकी और निगेटिव्ह प्रेशर रुम (नकारात्मक दबाव कक्ष) प्रौद्योगिकी का उपयोग कर इस डोफिंग स्टेशन का निर्माण किया गया है।

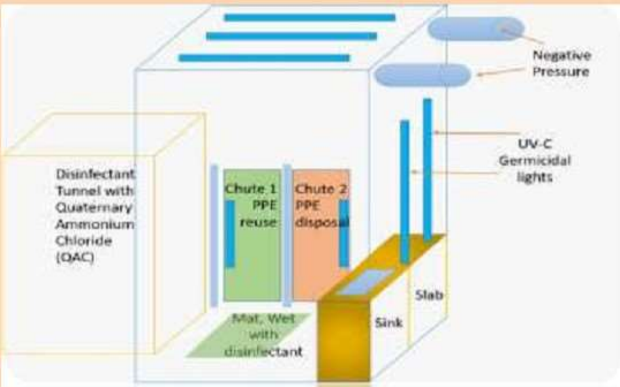

यूव्ही–सी निर्जीवाणुकरण पेटी

भा.प्रौ.सं. रोपड़ ने किराने का सामान, सब्जियां, पैकेज और व्यक्तिगत सामान को निर्जावाणुकरण करने हेतु यूव्ही–सी कीटाणुनाशक विकिरण तकनीक पर आधारित सैनिटाईजिंग डिवाइस (स्वच्छता उपकरण) का निर्माण किया है। यह डिवाइस एक पेटी के रुप में है। यह पेटी निर्माण करने की दृष्टि से सरल और संचालन की दृष्टि से सुविधाजनक है।

यूवी–सी लाइट्स मानव त्वचा और आंखों के लिए हानिकारक हैं इसलिए इस पेटी को को बच्चों से दूर रखा जाना चाहिए और दीपक चालू होने पर बंद रखा जाना चाहिए।

निगेटिव्ह प्रेशर रुम

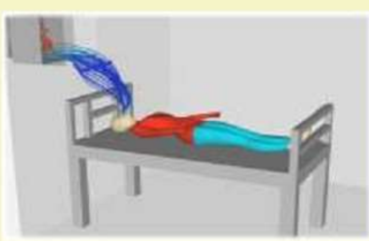

भा.प्रौ.सं. रोपड़ ने एकांत कक्ष और स्वास्थ्य परीक्षण प्रयोगशालाओं में हवा के माध्यम से कोविद–19 के संचरण को रोकने के लिए एक निगेटिव्ह प्रेशर रुम (नकारात्मक दबाव कक्ष) (एनपीआर) का एक डिजाइन विकसित किया है, यह निगेटिव प्रेशर रुम की तकनीक की सहायता से चिकित्सा कर्मचारियों को संक्रमण से बचाया जा सकता है।

कम लागत संवातक (Low Cost Ventilator) भा.प्रौ.सं. रोपड़ ने एक कम लागत संवातक (Ventilator) का निर्माण किया।

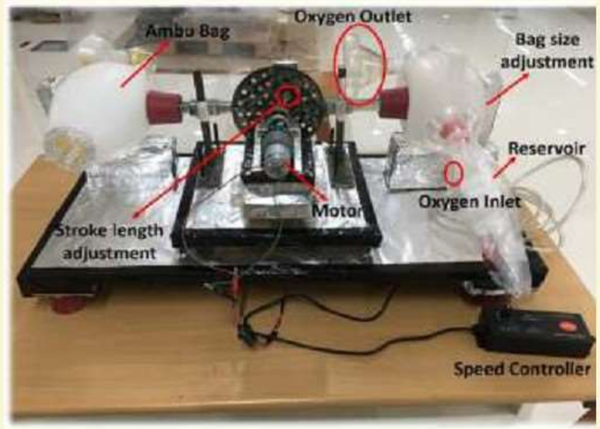

रोकथाम पेटी

अग्रपंक्ति के चिकित्सा कर्मचारियों को कोविद संक्रमण से बचाने हेतु अधिकांश अस्पतालों में आसानी से उपलब्ध वॉल–गैस की आपूर्ति से निर्वात को जोड़कर एक निगेटिवव्ह प्रेशर रुम में परिवर्तित करने की दिशा में भा.प्रौ.सं. रोपड़ के वैज्ञानिकों कार्य किया है।

3 मार्गीय पीपीई निर्जीवाणुकरण

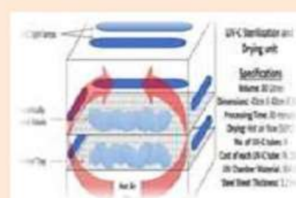

यह हमारे लिए गौरव की बात है कि आईआईटी रोपड़ ने तीन सिद्धि प्राप्त रोगजनक–घातकों (Sterlizer) तकनीक नामतः पराबैंगनी–सी विकिरण, अल्ट्रा–सोनिकेशन और एक ऑक्सीकरण एजेंट के सफल उपयोग की मान्यकरण की है। इन सब का एकाग्र प्रयुक्त 'इस्तेमाल की हुई पीपीई किट' को कीटाणुरहित और शुद्ध करने के लिए एक नये उपकरण का डिजाइन तैयार किया गया है। इन तकनीकों से विषाणु के कैप्सिड (A protein shell of virus, enclosing its genetic material) को बाधित और उन्हें निष्क्रिय करने के लिए लाभदायक पायी गई है। इन तीनों स्टेरलाइजर को संयोजित तथा उत्तम नियोजित करके, श्वासयंत्र और पीपीई किट को पूरी तरह से कीटाणुरहित किया जा सकता है।

लाइन रोबोटः

भा.प्रौ.सं. रोपड़ टीम कोविद 19 मरीजों के वार्ड में दवा / भोजन पहुंचाने के लिए रोबोटिक के निर्माण के साथ आई है ताकि इन गतिविधियों में चिकित्सा कर्मचारियों के हस्तक्षेप को कम किया जा सके।

संपर्क मीटर

भा.प्रौ.सं. रोपड़ ने संपर्क–ओ–मीटर नाम से मोबाइल आधारित ऐप का निर्माण किया है जो कोरोना वायरस की अधिकतम संभावना क्षेत्र की पहचान करता है।

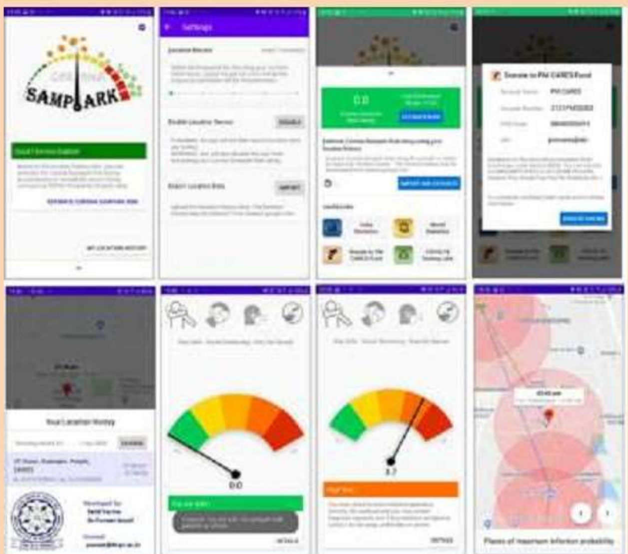

कोविद 19 संदिग्धों की पहचान हेतु इंटिलिजेंटर इन्फ्रारेड विजन सिस्टम

इंटेलिजेंट इन्फ्रारेड विजन सिस्टम जो वहनीय, किफायती है, और भीड़–भाड़ वाली जगहों पर मानव हस्तक्षेप के बिना संदिग्धों का पता लगाने की क्षमता को स्वयं निर्णय लेने की क्षमता के साथ रिमोट स्क्रीनिंग क्षमताओं के साथ सुरक्षित है।

सार्स रोगियों के लिए सस्ता, सघन और संक्रमण मुक्त बीआईपीएपी नकाब

बीआईपीएपी को वेंटिलेशन सहायता की आवश्यकता नहीं है, और यह कम गंभीर कोविद 19 के मामलों में पूर्ति के रुप में प्रभावी सिद्ध हुआ है जबकि पारंपारिक वेंटिलेटर जटिल मामलों में उपयोग किए जाते है।

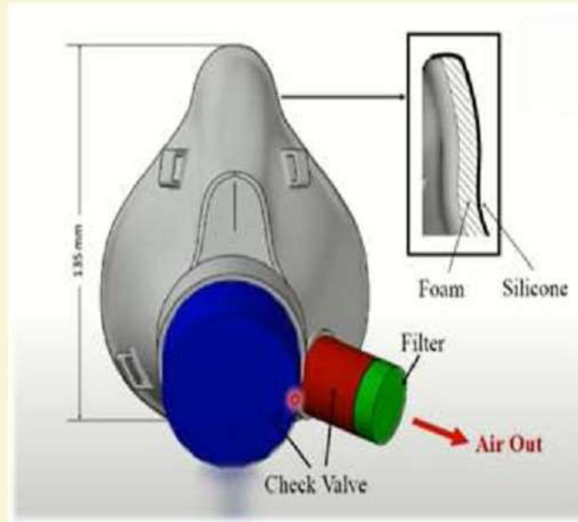

मेडी–सारथी और कृत्रिम बुद्धिमत्ता शक्ति चालित ट्रॉली

भा.प्रौ.सं. रोपड़ ने स्नातकोत्तर चिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान, चण्डीगढ़ के सहयोग में संक्रमित रोगियों और दूषित परिवेशों के साथ स्वास्थ्य कर्मचारियों के संपर्क को कम करने के उद्देश्य से कोविद 19 रोगियों के लिए मेडी–सारथी और कृत्रिम बुद्धिमत्ता शक्ति चालित ट्रॉली (MEDI & Sarathi and AI Powered Trolley) नामक दो अत्याधुनिक कम लागत स्वायत्त वाहनों का आरंभ किया।

भा.प्रौ.सं. रोपड़ द्वारा कोविद 19 के दौरान किए गए अनुसंधान एवं विकास प्रयासों पर मानव संसाधन मंत्रालय की प्रशस्ति टिप्पणियां

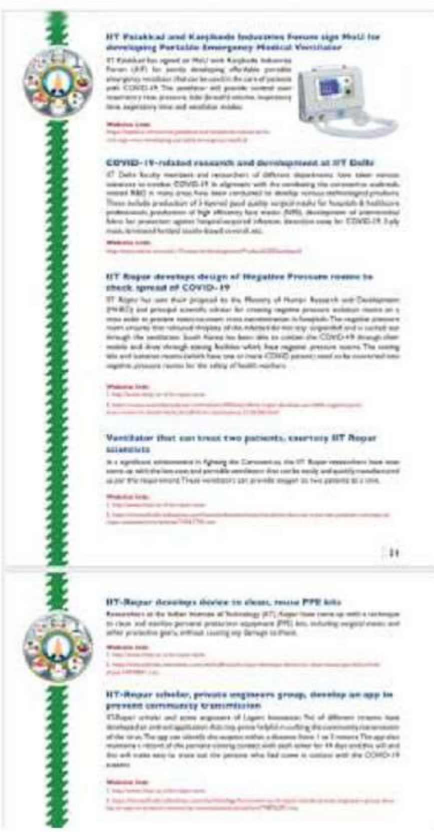

पुरस्कार एवं प्रशंसा

डॉ. श्रीकांत एस. पाधे,
सहायक प्राध्यापक, यांत्रिकी अभियांत्रिकी विभाग को भारतीय रक्षा विनिर्माणकर्ता सोसाइटी द्वारा नामित किया गया।

श्री सिद्धांत नंदा,
अनुसंधान शोधार्थी, जैव चिकित्सा अभियांत्रिकी को वैझमैन इन्स्टीट्यूट आफ सायंस, इस्राइल में नेचर्स कॉंफ्रेस नेक्स जनरेशन इम्यूनोलोजी 2020 में पोस्टर प्रस्तुति हेतु चयनित किए गए।

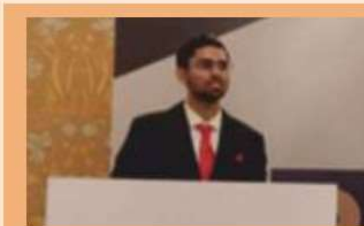

श्री अश्वीन गोयल,
प्रौद्योगिकी स्नातक के छात्र ने बीएसई के सहयोग के साथ लेगासीस सर्विसेस द्वारा आयोजित आईपी हेक्थॉन में अपना प्रथम स्थान सुरक्षित किया।

सुश्री रिया जोशी,
सीबीएमई, प्रौद्योगिकी निष्णात की छात्रा को शोधार्थियों हेतु प्रतिष्ठित इण्डो–यूएस खुराना कार्यक्रम 2020 हेतु चयनित किया गया है।

डॉ. प्रभात अग्निहोत्री,
सह प्राध्यापक, यांत्रिकी अभियांत्रिकी विभाग का पॉलिमर कंपोसाइट पर शोधपत्र को लगातार दो वर्ष 2017–2018 और 2018–2019 हेतु शीर्ष डाउनलोड़ लेख के रुप में मान्यता दी गई।

श्री विनय घई, सुश्री तृप्ति मीधा, श्री मलकीत सिंह, श्री सुभज्योति और सुश्री अपूर्वा सिक्का
आदि शोधार्थियों ने सिंगापुर में जीवाईएसएस 2020 में पोस्टर प्रस्तुति की।

IIT team comes up with low-cost ventilators

Industries dept also working with units

भा.प्रौ.सं. रोपड़ ने कम लागत संवातक – आर्म के विकास हेतु कोविद 19 अनुसंधान के अंतर्गत डीबीटी–बीआईआरएसी द्वारा अनुदान प्राप्त किया।
इस हेतु 500 आवेदनों में से केवल 16 प्रस्तावों को अनुमोदित किया गया था।

संस्थान के पांच अनुसंधान शोधार्थी श्री विकाश त्रिपाठी, श्री पंकज कुमार, श्री मलकीत सिंह, सुश्री जूही चौहान और सुश्री भावना राणा को न्यूटन–भाभा पीएच.डी स्थानन कार्यक्रम 2019–20 हेतु चयनित किया गया।

श्री राहुल शुक्ला,
शोधार्थी, जैवचिकित्सा अभि. केन्द्र को बीआईआरएसी की हाइली कंपेटेटीव्ह बायोटैक्नोलोजी इग्नीशन ग्रांट से पुरस्कृत किया गया।

CAT 2019: 2 IIT Ropar students are among top 0.1% in country

संस्थान के दो विद्यार्थियों ने सामान्य प्रवेश परीक्षा कैट 2019 में 99.9 प्रतिशत के उपर अंक प्राप्त किए जिसमें आभास शर्मा ने 99.93 प्रतिशत और सुश्री मन्या दवे ने 99.90 प्रतिशत अंक अर्जित किए।

श्री विनय घई, श्री निशांत साक्या और श्री अजिंक्य सिरसाट
इन शोधार्थियों ने उत्कृष्ट लोकप्रिय विज्ञान कहानी हेतु डीएसटी, भारत से अभिव्यक्ति अनुसंधान हेतु लेखन कौशलों की वृद्धि पुरस्कार प्राप्त किया।

श्री अनमोल रतन,
प्रौद्योगिकी स्नातक छात्र को 14 से 17 फरवरी 2020 तक एमए यूएसए में आयोजित एशिया और अंतरराष्ट्रीय संपर्क हेतु प्रतिष्ठित हावर्ड परियोजना सम्मेलन के लिए चयनित किया गया।

भा.प्रौ.सं. रोपड़ का अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर

भा.प्रौ.सं.रोपड़ ने अपने परिसर और विद्यार्थियों के अलावा युवाओं के सशक्तिकरण की दिशा में एक ओर कदम बढ़ाया है। भा.प्रौ.सं. रोपड़ ने प्रधानमंत्री विशेष छात्रवृत्ति योजना के अंतर्गत देशभर के एआईसीटीआई अनुमोदित संस्थानों में अध्ययनरत जम्मू और कश्मीर के 100 गुणवत्ता विद्यार्थियों की प्रशिक्षुता के विस्तारण हेतु श्री रमेश पोखरियाल 'निशंक', केन्द्रीय मंत्री, मानव संसाधन विकास मंत्रालय की गरिमामयी उपस्थिति में अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा के साथ हाथ मिलाया है। इस समझौता ज्ञापन के अंतर्गत भा.प्रौ.सं. रोपड़ जम्मू और कश्मीर से 100 गुणवत्ता विद्यार्थियों को अपने परिसर में प्रशिक्षुता हेतु पंजीकृत करेगा। इस समझौता ज्ञापन का उद्देश्य जम्मू और कश्मीर के युवाओं को राष्ट्रीय महत्व के संस्थानों की शैक्षणिक संस्कृति से जोड़ना है।

ठोस अपव्यय प्रबंधन पर दो माह का पाठ्यक्रम

भा.प्रौ.सं. रोपड़ ने पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा समर्थित पंजाब विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी राज्य परिषद के तत्वावधान में ठोस अपव्यय प्रबंधन हेतु हरित कौशल विकास कार्यक्रम (जीएसडीपी) के अंतर्गत दो माह के अल्पकालिक पाठ्यक्रम का सफलतापूर्वक आयोजन किया।

यह पाठ्यक्रम विशेष रूप से क्षेत्र स्तर पर और स्थायी भविष्य के लिए पर्यावरण की गुणवत्ता को बहाल करने के लिए पर्यावरण संरक्षण / परिरक्षण से संबंधित क्षेत्रों में कुशल कार्यबल / श्रमशक्ति को बढ़ाने के लिए शुरू किया गया है। इस पाठ्यक्रम के लिए, विभिन्न पृष्ठभूमि और मूल के 15 छात्रों को पंजीकृत किया गया था।

प्रौद्योगिकी और व्यावसायीकरण पर कार्यशाला

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान रोपड़ के बौद्धिक संपदा अधिकार (आईपीआर) प्रकोष्ठ ने दिनांक 12 फरवरी 2020 को भा.प्रौ.सं. रोपड़ में उद्योग संवर्धन प्रौद्योगिकी और व्यावसायीकरण पर कार्यशाला का आयोजन किया। इस कार्यशाला को आईपीआर संवर्धन और प्रबंधन, उद्योग संवर्धन और आंतरिक व्यापार विभाग, भारत सरकार द्वारा प्रमुखता से प्रायोजित किया गया था तथा मिशन इनोवेशन पंजाब के अंतर्गत पंजाब राज्य विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद द्वारा समर्थित थी।

कृषि और जल तकनीक हेतु भा.प्रौ.सं.रोपड़ में केन्द्र का स्थापना

भारत सरकार के विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग ने कृषि और कृषि से संबंधित बिंदुओं को ध्यान में रखते हुए, अनाज प्रबंधन, जल गुणवत्ता सुधार, जल/मृदा में खतरनाक पदार्थों की पहचान और उनके उपचार, खेती में आईओटी आधारित साइबर फिजीकल प्रणाली का उपयोग आदि उद्देश्यों के साथ भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान रोपड़ में एक बहुआयामी केन्द्र की स्थापना की है ।

यह केन्द्र जल/मृदा की जांच के उपकरण बनाने की तकनीक विकसित करने की दिशा में कार्य करेगा। मृदा की उर्वरकता को बढ़ाने हेतु प्रौद्योगिकी और तकनीक का विकास करेगा। कृषि कार्यों में उपयोग किए जानेवाले रासायनिक खाद और कीटनाशक औषधियों का कम से कम उपयोग कर अधिक से अधिक फसल का उत्पादन करने हेतु तकनीक का विकास करना भी शामिल होगा। यह केन्द्र इन सभी समस्याओं से आगे बढ़ते हुए कृषि निगरानी हेतु तकनीकी का विकास कार्य भी करेगा जिसमें कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित खेती की निगरानी अहम बिंदु है। इस क्रम में कृषि अपशिष्टों का उपयोग और उनका नियोजन भी शामिल होगा। जैसे फसल कटाई के बाद जो भी अपशिष्ट शेष रहते है उनसे घरेलू वस्तुओं आदि को बनाने हेतु भी तकनीक का विकास इसका एक उद्देश्य होगा।

शहरी खेती (अर्बन फार्मिंग) इस केन्द्र का एक आकर्षक पहलू है। जिसके तहत वर्तमान में शहरी करण के कारण कृषि हेतु भूमि की अपर्याप्तता को देखते हुए अर्बन फार्मिंग की तकनीक का विकास किया जाएगा। यह केन्द्र फसल की कटाई के समय और कटाई के बाद फसल की बर्बादी को ध्यान में रखते हुए तकनीक के विकास पर कार्य करेगा। कई बार खराब वातावरण अथवा परिवहन समस्या के कारण फसल की बर्बादी हो जाती है। इसलिए कृषि उत्पादों की समय–सीमा बढ़ाने हेतु उनकी बीज की गुणवत्ता को बढ़ाने की दिशा में भी यह केन्द्र कार्य करेगा।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण और हमारी संस्कृति

अखंड आकाशगंगाओं के भीतर एक जीवंत नक्षत्र के नाभिकमल में एक चीरातन भूखंड 'भारतवर्ष'। इस देश और यहाँ के लोगों के चिन्मय व्यवहार और संपन्न व्यक्तिव का सतत आविष्कार का साक्षी और संरक्षण का एकमात्र गागर हमारी पुरातन संस्कृति, 'भारतीय संस्कृति'। गंगा, नर्मदा, ताप्ती, कृष्णा, और कावेरी और न जाने ऐसी कितनी नदियों के अक्षय लहरों से पोषित यह भारतीय संस्कृति को एक भीष्म पितामह का संज्ञान दिया जा सकता है। जिसे इच्छा मृत्यु का वर प्राप्त है। सनातन धर्म के दुर्ग तले और "वसुधैव कुटुबकम् का मंत्र लिए ये आदि–अनादि काल से बह रहा है और तब तक बहता रहेगा जब तक ये मनुजता के आखरी सांस के साथ खतम नहीं हो जाता। हर नवीन पीढी में बड़ी सहजता के साथ ढलता ये भारतीय संस्कृति का पावन जल हमारे अस्तित्व के मस्तक पर मान का तिलक है। जक तक भारत भूमि की मिट्टी में भारतीयता का गौरव और दर्शन समाहित है, तब तक इसकी प्रसांगिकता खत्म नहीं होगी। ये आज भी मानव सभ्यता और उसके सक्रिय अन्वेषण की धरोहर है। पर आज जहाँ सभ्यता के वाहक खड़े हैं वो एक आधुनिक, विचारशील और वैज्ञानिक सजगता का धरातल है। विज्ञान और इसके लिए व्यवहारिक पध्दति तकनीकी को अस्त्र बनाकर वर्तमान समय के पीठ पे सवार मनुजता अपनी हर कमजोरी को दूर कर शक्ति का अनुगामी बनने की भरपूर कोशिश कर रही है। विज्ञान ने जो सबसे बड़ी शक्ति मनुजता को दी वो एक सम्यक दृष्टि या 'वैज्ञानिक दृष्टिकोण'। रचनात्मक सोचों को ऊँचा, कभी न खत्म होने वाला फलक, अनुभव का क्रम लिए एक सम्यक कार्य पद्धति। अतः वैज्ञानिक दृष्टिकोण और संस्कृति इन दोनों का अपना–अपना महत्व है।

पर क्या वैज्ञानिक दृष्टिकोण और संस्कृति, दोनों के बीच में कोई द्वंद है? क्या वैज्ञानिक दृष्टिकोण संस्कृति को घायल कर रही है? क्या संस्कृति वैज्ञानिक दृष्टिकोण के राह में बाधक है? इन दोनों का ऐसा क्या संबंध है? संसकृति जहाँ परंपरागत स्वरूप लगता है, वहीं वैज्ञानिक दृष्टिकोण नवीन मनुजता का भय प्रतीत होता है। मानव मानसिकता की जड़ता की सोच दोनों में विरोधाभास देखती है। ये दोनों एक दूसरे को काटते नहीं वरन सशक्त बनाते हैं।

भारतीय संस्कृति और विज्ञान एक दूसरे के पूरक हैं। भारतीय धर्म संस्कृति अपने आप में विज्ञान है। हमारी संस्कृति मात्र परंपरा और संस्कार के व्यवहार का प्रतीक नहीं है बल्कि ये तो अंतर्मन की व्यवहारिकता का प्रतिफल है। ये निरंतरता की प्रक्रिया है। सतत विकास, संस्कार–परिस्कार और विचार शोधन इसके विभिन्न अंग हैं। इसलिए परंपरा की मनीषा का ये पुरातन भाग्यकर रूढिवादिता और तथाकथित तर्क संगत हीनता से कहीं ऊपर है। परिवर्तन और अपने अंदर नये भाव समाहित कर लेना इसकी अनोखी क्षमता है। इस ने इसे अक्षुण बनाए रखा है। वर्तमान भारतीय संस्कृति सतरंगी आभा समेटे है, इसमें कोई एक धर्म नहीं बल्कि आध्यात्म है, कोई एक वर्ण या जाति नहीं वरन पूर्ण समाजवाद है, समता है। सार्वभौमिक एकता और अखंड एकता इसका आधार है। अतः इसे पुराना, तर्कहीन परंपरा और मिधा यथावार समक्ष कर ठुकराना गलत होगा और दूसरी ओर विज्ञान, इसका तो मूलमंत्र ही समरूपता और एकता है। इसका अंतिम लक्ष्य अखंड पूर्णता है। रसायन अगर ऐसा तत्व खोज ले जिससे हर तत्व और पदार्थ बना हो और भौतिकी ऐसी ऊर्जा का रहस्य ढूँढ लें जो हर गति का आधार है तब ये विज्ञान का पराकाष्ठा होगा। अतः यह कहना गलत न होगा कि वैज्ञानिक दृष्टिकोण का ध्येय एकरूपता हीं है। पर इसमें विचारशील है, अनुभव है, समक्ष है और तर्क है और ये सारे गुण संस्कृति के विरोधाभाषी प्रतीत नहीं होते।

ये सनातन संस्कृति जिसका आधार पुरानी वैदिक संस्कृति रही है के विचारशीलता और सक्रियता का लोहा विज्ञान जगत ने माना है। आधुनिकता युग में भी इसकी महत्ता मापी जा सकती है। वैदिक ग्रंथ और पुरातन पध्दतियाँ और कुछ नहीं बल्कि पुरातन सिध्दांतों और अनवेषण का प्रतिबिंब है। इन्हे कहीं न कहीं वैज्ञानिक दृष्टिकोण तो है। पतंजलि के 'योगसूत्र' के चमत्कार को ही देखा जा सकता है। 'योग' स्वांस और ध्यान साधना पर केंद्रित ये पद्धति आज पूरे विषय में अपना डंका बजा रही है और आधुनिकता का कोई दावेदार इसकी पध्दति को नकार नहीं सकता। दूसरा गढ है 'आयुर्वेद' इस पुरातन चिकित्सा पध्दति की विश्वसनीयता को हर किसी ने माना है। न केवल ये क्षेत्र बल्कि हर स्वरूप जो संस्कृति के रंग में रंगा है ऐसे ही वैज्ञानिक क्षमता को लिए हुए हैं। अतः आज के आधुनिक और दूरदर्शी विज्ञान का ये कर्तव्य है कि वो संस्कृति के वैज्ञानिक सारगर्भिता को अन्वेषित करे और मनुजता के हित में इनका प्रतिपादन करें।

वैदिक ग्रन्थ की रचना गहन–चिन्तन और वैज्ञानिक आधार पर की गयी है। अगर इस दृष्टि से देखें तो यहां के ऋषि मुनि बड़े वैज्ञानिक थे। प्राचीन वैदिक ग्रन्थ शोध ग्रन्थ की कृति के रूप में स्थापित था। यही नहीं आधुनिक विज्ञान की जननी भारतीय धर्म विज्ञान ही है, जो अरब देशों से होते हुए पश्चिमी देशों तक पहुंची और वहां से आधुनिक विज्ञान का स्वरूप ग्रहण करके प्रतिष्ठित हुई। यह बातें होम मिनिस्ट्री से संबद्ध डीआरडीओ (क्त्क्) फेमस साइंटिस्ट 'डॉ अनन्त नारायण भट्ट' ने कहीं। वह एमपीपीजी कॉलेज जंगल धूसड़ में ऑर्गेनाइज 'भारतीय संस्कृति एवं वैज्ञानिक सोच' टॉपिक पर अपना लेक्चर दे रहे थे। इसी प्रकार संस्कृत भाषा भी विश्व की उन पांच भाषाओं में स्थान रखती थी, इसीलिए इसे प्राकृतिक भाषा भी कहा गया। संस्कृत भाषा के उच्चारण में न केवल स्पष्टता है, बल्कि मानसिक बीमारियों का इलाज भी सम्भव है। भारतीय सांस्कृतिक परम्पराओं में तमाम ऐसे बातें व्याप्त हैं जिनका अत्यन्त वैज्ञानिक महत्व है। भारतीय संस्कृति में तुलसी की पूजा का महत्व भी अत्यन्त उपयोगी है। आज कैंसर एवं तमाम प्रकार के गम्भीर बीमारियों में तुलसी की उपयोगिता जगजाहिर है। भारतीय संस्कृति में नमस्कार करने के पीछे भी वैज्ञानिक दृष्टि ही है, इससे न सिर्फ हम सामने वाले के मन में बसते हैं, बल्कि उंगलियों के आपसी दबाव की वजह से हमारे मस्तिष्क में संवेदनशीलता पैदा होने से 'स्मरण शक्ति' मजबूत होती है। भारत की गौरवशाली इस सांस्कृतिक परम्परा आज के इस जीवन पद्धति के कारण बढ़ रहे संकटों के लिए रामबाण है।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण ने एक अनन्त शक्ति दी है। पर इस शक्ति का उपयोग कहाँ करना है ये संस्कृति के समरूपता के मापदंड में हो तो बेहतर है। दोनों एक दूसरे को प्रेरित और विकसित करने में योगदान दे यही श्रेष्ट है। संस्कृति वो रास्ता देगी जहां विज्ञान खोज करे। अकेला विज्ञान आधुनिक विचारों के चकाचौंध में भटक सकता है। हम इस भटकाव को माप सकते हैं। आज ज्ञान भ्रम में है कि वो अपने शक्ति का प्रयोग कहाँ करे। ऐसा इसलिए कयोंकि संस्कृति के लय को पुरातन कहकर ठुकराया जा रहा है।

अतः वैज्ञानिक दृष्टिकोण के प्रबल अश्वों के आभिशान सभ्यता के रथ पर विकास मार्ग पर अग्रसर मानवता को अपने साथ संस्कृति का कवच कुण्डल तो रखना ही होगा क्योंकि यही उसे अंतिम ध्येय का अनुसरण कराऐगी।

आज वतर्मान परिप्रेक्ष्य की बात की जाय तो हम पाते हैं कि हमारी सभ्यता की छवि कुछ धूमल होती जा रही है। पाश्चात्य जगत की चमक धमक से हम अपने संस्कारों को भूलते जा रहे हैं। वहीं दूसरी ओर पाश्चात्य जगत के लोग हमारी वैदिक संस्कृति को अपनाने हेतु आगे आ रहे हैं। आज जहाँ अमेरिकन सीनेट की बैठक की शुरुआत जहाँ 'गायत्री मंत्र' से होती वहीं हमारे दिन की शुरुआत पॉप और विदेशी धुनों की गानों से होती है। जहाँ आज डॉक्टरों का मानना है कि सारे परेशानियों एवं दिमागी उलझनों की वजह तनाव है, यही बात हमारे पुराणों में इन शब्दों में लिखी है

"गते शोके न कत्रत्यो, भविष्यम् नैव चिन्तयेत।

वर्व्रमानने कालेन, प्रवर्त्तन्ते विचक्षणाः"।।

अर्थात–आज पुनः हमें अपनी सभ्यता एवं संस्कृति की ओर कर अपनी अक्षुण्ण सभ्यता की पहचान कायम रखनी होगी। हम अपनी 'जगद गुरू भारत' की प्रतिष्ठा को बनाए रखेंगे। इस हेतू हमें स्वामी दयानन्द सरस्वती के वचनों को फिर से दुहराना होगा।

'वेदों की ओर लौटो'।

डॉ. अनुपम अग्रवाल,
सह प्राध्यापक,
यांत्रिकी अभियांत्रिकी विभाग

71वें गणतंत्र दिवस समारोह का आयोजन

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान रोपड़ ने 26 जनवरी 2020 को देशभक्ति के से ओत–प्रोत वातारवरण में 71वें गणतंत्र दिवस को बड़े ही उत्साह के साथ मनाया। इस अवसर पर भा.प्रौ.सं.रोपड़ का गैरसरकारी संगठन पहचान–एक सफर ने स्वच्छ भारत अभियान के दौरान एकत्रित किए गए अपशिष्ट कागजों और धातुओं से अशोक चक्र का निर्माण किया।

अद्वितीय 2020

भा.प्रौ.सं. रोपड़ का तकनीकी समारोह अद्वितीय 2020 का समापन इसरो के पूर्व अध्यक्ष डॉ. के. राधाकृष्णन द्वारा अतिथि व्याख्यान से हुआ।

डॉ. के. राधाकृष्णन ने अपने व्याख्यान में इसरो की सफल गाथा और हालिया अंतरिक्ष अभियानों प्रमुखता से चंद्रयान और मंगलयान से प्राप्त सभी उपलब्धियों पर बात की।

श्रोताओं ने चल रहे शोध से संबंधित अपनी जिज्ञासाओं को सामने रखा। डॉ. के. राधाकृष्णन ने इसरो को अपने करियर के रुप में किस तरह देखा जा सकता है इस पर सभी युवाओं को मार्गदर्शित किया।

भा.प्रौ.सं. रोपड़ की 54 वें अंतर भा.प्रौ.सं. खेल समारोह में प्रतिभागिता

भा.प्रौ.सं. रोपड़ ने भा.प्रौ.सं. खड़गपुर में आयोजित अंतर भा.प्रौ.सं. खेल समारोह में कई खेलों में अपनी टीमों के द्वारा प्रतिभागिता सुनिश्चित की।

54वें अंतर भा.प्रौ.सं. खेल समारोह का उदघाटन समारोह दिनांक 14 दिसंबर 2019 को भा.प्रौ.सं. खड़गपुर में तथा दिनांक 15 दिसंबर 2019 को भा.प्रौ.सं. भुवनेश्वर में आयोजित किया गया था।

इस खेल समारोह में भा.प्रौ.सं. रोपड़ के कुल 127 विद्यार्थियों ने सहभागिता ली। खडगपुर में आयोजित अंतर भा.प्रौ.सं. खेल समारोह में गोला फेंक प्रतियोगिता में भा.प्रौ.सं. रोपड़ के प्रौद्योगिकी स्नातक का विद्यार्थी श्री अमित चिप्पा ने कास्य पदक अपने नाम किया।

राजभाषा प्रशिक्षण

कंप्यूटर पर हिंदी में कार्य करने के लिए बेसिक प्रशिक्षण कार्यक्रम वर्ष 2019–20

वर्ष 2019–20 के अंतर्गत हिंदी शिक्षण योजना, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, चंडीगढ़ में दिनांक 27.01.2020 से 31.01.2020 तक कंप्यूटर पर हिंदी में काम करने के लिए पांच पूर्ण कार्यदिवसीय बेसिक प्रशिक्षण कार्यक्रम में संस्थान के पांच सदस्यों श्री पुनीत गर्ग (सहायक कुलसचिव, विद्यार्थी मामले), श्री विजय नारायण, कनिष्ठ अधीक्षक, अनुसंधान अनुभाग तथा डॉ. रवि कान्त (सहायक प्राध्यापक, यांत्रिकी अभियांत्रिकी विभाग) ने सहभागिता ली।

वर्ष 2019–20 के अंतर्गत हिंदी शिक्षण योजना, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, चंडीगढ़ में दिनांक 03.02.2020 से 07.02.2020 तक कंप्यूटर पर हिंदी में काम करने के लिए पांच पूर्ण कार्यदिवसीय बेसिक प्रशिक्षण कार्यक्रम में संस्थान के दो सदस्यों श्री अश्वनी चंद्रा (कनिष्ठ सहायक) और सुश्री सनप्रीत कौर (कनिष्ठ सहायक) ने सहभागिता ली।

हिंदी टंकण पत्राचार पाठ्यक्रम प्रशिक्षण सत्र फर. जुलाई 2020

केन्द्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा आयोजित किए जा रहे हिंदी शब्द संसाधन (हिंदी टंकण) पत्राचार प्रशिक्षण कार्यक्रम (59 वां सत्र) हेतु भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान रोपड़ के कुल 8 सदस्य श्री अक्शप्रीत सिंह तम्बड़, कनिष्ठ सहायक, श्री विकास कौशिक, वरिष्ठ सहायक, श्री दिवाकर शर्मा, वरिष्ठ सहायक, श्री सौरभ भाटिया, कनिष्ठ सहायक, सुश्री मनिन्दर पाल कौर, कनिष्ठ सहायक श्री गुरदीप सिंह, कनिष्ठ अधीक्षक, श्री पुनीत गर्ग, सहायक कुलसचिव तथा डॉ. रवि कान्त, सहायक प्राध्यापक इस प्रशिक्षण का लाभ ले रहे हैं।

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों का आयोजन

भा.प्रौ.सं. रोपड़ की जनवरी – मार्च 2020 की तिमाही की बैठक संस्थान के निदेशक प्रो. सरित कुमार दास की अध्यक्षता में दिनांक 19 फरवरी 2020 तथा अप्रैल–जून 2020 की तिमाही की बैठक 19 जून 2020 को संपन्न हुई। इन बैठकों को संस्थान के राजभाषायी कार्यों एवं गतिविधियों की समीक्षा की गई और भविष्यिक रुपरेखा पर चर्चा की गई।

दिनांक 24 जनवरी 2020 को हिंदी कार्यशाला का आयोजन

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान रोपड़ में दिनांक 24 जनवरी 2020 को हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में संस्थान के सिविल अभियांत्रिकी विभाग के सहायक प्राध्यापक डॉ. ऋत कमल तिवारी वक्ता के रुप में आमंत्रित थे। डॉ. तिवारी जी ने "राजभाषा हिंदीः वर्तमाम परिदृश्य" विषय पर मार्गदर्शनपरक व्याख्यान दिया। डॉ. तिवारी ने अपने व्याख्यान में हिंदी भाषा के वैविध्य तथा विशेषताओं पर बात की। साथ ही संस्थान में हिंदी में कार्य करने हेतु सभी उपस्थितों की जिज्ञासाओं तथा समस्याओं को भी समाधान किया।

71वें गणतंत्र दिवस पर देशभक्ति गीत गायन प्रतियोगिता आयोजन

71 वें गणतंत्र दिवस पर संस्थान के हिंदी प्रकोष्ठ ने देशभक्ति गीत गायन प्रतियोगिता का आयोजन किया। इसमें संस्थान के सभी स्तरों से उत्साहजनक प्रतिभागिता देखी गई। सभी प्रतिभागियों ने गणतंत्र दिवस की पूर्व संध्या पर देशभक्तिपरक गीतों से वातावरण को देशभक्ति के रंग में रंग दिया।

देशभक्ति गीत गायन प्रतियोगिता में संकाय सदस्यध्कर्मचारियों में कुल पांच तथा विद्यार्थियों में कुल 4 प्रतिभागियों ने पुरस्कार प्राप्त किए। संकायध्कर्मचारियों में प्रथम पुरस्कार श्री विपिन कुमार, द्वितीय पुरस्कार सुश्री श्वेता रानी, तृतीय पुरस्कार प्रो. नरेश राखा, प्रथम पुरस्कार श्री विजय सिंह तथा द्वितीय प्रोत्साहन पुरस्कार श्री ललित कुमार दिए गए। विद्यार्थियों में प्रथम पुरस्कार श्री प्रणव जोहरी, द्वितीय पुरस्कार श्री शशांक शेखर कपूर, तृतीय पुरस्कार श्री रजत धीमान और प्रथम प्रोत्साहन पुरस्कार श्री अनूप कुमार पाठक को दिया गया।

भा.प्रौ.सं. रोपड़ में दो दिवसीय मातृभाषा दिवस का आयोजन

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान रोपड़ ने मातृभाषा दिवस उपलक्ष्य पर 20 फरवरी तथा 21 फरवरी 2020 को दो दिवसीय मातृभाषा दिवस का अपने संस्थान में आयोजन किया। इस दो दिवसीय आयोजन में संस्थान के संकाय सदस्यों, अधिकारियों, कर्मचारियों तथा विद्यार्थियों के लिए कुल 03 प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। संस्थान के सदस्यों के लिए दिनांक 20 फरवरी 2020 को विद्युत अभियांत्रिकी विभाग के बैठक कक्ष 119 में मातृभाषा कविताध्गीत गायन प्रतियोगिता तथा मातृभाषा भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में संस्थान के सभी स्तरों से उत्साहजनक प्रतिभागिता देखी गई।

मातृभाषा गीत गायन प्रतियोगिता तथा मातृभाषा भाषण प्रतियोगिता में प्रतिभागियों ने अपनी– अपनी मातृभाषा जैसै कि पंजाबी, उर्दू, उडिया, हिंदी, बांग्ला आदि भाषाओं में गीत गायन तथा भाषण दिया। इस प्रतियोगिता के परीक्षक के रुप में विद्युत अभियांत्रिकी विभाग के सहायक प्राध्यापक डॉ. विनायक हांडे थे। इसी प्रकार से मातृभाषा भाषण प्रतियोगिता में प्रतिभागियों ने अपने वक्तव्य द्वारा अपनी भाषा और संस्कृति के विभिन्न पहलुओं तथा विशेषताओं को सभी के समक्ष रखा। इस भाषण प्रतियोगिता के परीक्षक के रुप में विद्युत अभियांत्रिकी विभाग की सहायक प्राध्यापक डॉ. रंजना सोढ़ी थी।

सुश्री हरप्रीत कौर (पुस्त.सू. अधि.) एवं श्री शौर्य दत्ता (विद्यार्थी) प्रतियोगिता में प्रस्तुति देते हुए

मातृभाषा दिवस के आयोजन के दूसरे दिन संस्थान के विद्यार्थियों के लिए पोस्टर मेकिंग प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में संस्थान के विद्यार्थियों ने अपने कलागुणों का परिचय देते हुए अपनी भाषा और संस्कृति की विशेषताओं को पोस्टर के माध्यम से दर्शाया। इस अवसर पर संस्थान के निदेशक प्रो. सरित कुमार दास ने अपनी उपस्थिति से सभी प्रतिभागियों का उत्साहवर्धन किया।

मातृभाषा पोस्टर मेकिंग प्रतियोगिता में संस्थान के निदेशक प्रो. सरित कुमार दास अपनी उपस्थिति से प्रतिभागितायों का उत्सावर्धन करते हुए।

पोस्टर मेकिंग प्रतियोगिता के सभी प्रतिभागी अपने पोस्टर के साथ

भा.प्रौ.सं. रोपड़ में ऑनलाइन हिंदी कार्यशाला सह प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

भा.प्रौ.सं. रोपड़ में दिनांक 22 जून 2020 को सुबह 11.00 बजे ऑनलाइन हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया। इस कार्यशाला का विषय "कंप्यूटर में हिंदी का प्रयोग" (हिंदी टंकण के विशेष संदर्भ में) था। इस कार्यशाला हेतु वक्ता के रुप में श्री अरविंद कुमार, सहायक निदेशक, हिंदी शिक्षण योजना, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, चण्डीगढ़ वक्ता के रुप में उपस्थित थे।

इस ऑनलाइन कार्यशाला हेतु संस्थान के सदस्यों से उत्साहजनक प्रतिक्रिया प्राप्त हुई। इस कार्यशाला में सहभागिता लेने हेतु कुल 96 प्रतिभागियों ने पंजीकरण करवाया।

श्री अरविंद कुमार, सहायक निदेशक ने सभी सहभागियों को कंप्यूटर पर हिंदी में कार्य करते समय आनेवाली कठिनाईयों को चिन्हित किया और उसका क्रमबद्ध रुप से निवारण/समाधान भी दिया। श्री अरविंद कुमार, सहायक निदेशक ने हिंदी टाइपिंग के संदर्भ में हिंदी इन्स्क्रीप्ट कीबोर्ड, फोनेटिक कीबोर्ड को कैसे कंप्यूटर में स्थापित (इन्स्टॉल) किया जाता है, इसकी जानकारी दी। साथ ही, संयुक्ताक्षर को कैसे टाइप किया जाएं इसका भी प्रशिक्षण दिया। भा. प्रौ.सं.रोपड़ का हिंदी प्रकोष्ठ समय–समय पर अपने संस्थान में इस प्रकार का प्रशिक्षण आयोजित करता आ रहा है। किंतु संस्थान में कई नवनियुक्त कर्मचारियों की दृष्टि से यह कार्यशाला उपयोगी सिद्ध हुई। इसके अतिरिक्त, श्री अरविंद कुमार, सहायक निदेशक ने संस्थान के अधिकारियों तथा उच्च अधिकारियों को केन्द्र में रखते हुए Voice Typing कैसे की जाती है इसपर भी उन्हें प्रशिक्षित किया। इस कार्यशाला में डॉ. अरविंद कुमार गुप्ता, संकाय प्रभारी (हिंदी) विशेष रुप से उपस्थित थे।

ऑनलाइन कार्यशाला को समापन की ओर ले जाते हुए श्री लगवीश कुमार, हिंदी अधिकारी, भा.प्रौ.सं.रोपड़ ने श्री अरविंद कुमार, सहायक निदेशक का धन्यवाद ज्ञापित किया साथ ही सभी प्रतिभागियों का इस कार्यशाला सह प्रशिक्षण कार्यक्रम में सहभागिता लेने हेतु धन्यवाद ज्ञापित किया।

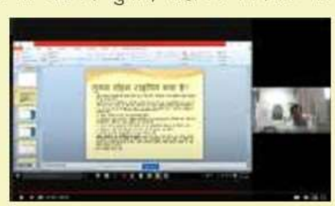

इस आनलाइन कार्यशाला हेतु पंजीकृत सभी कर्मचारियों को ई–प्रमाणपत्र प्रदान किए गए।

कर्म और फल

डूब रहे पत्थर ने पूछा ,सरिता से यूं रोकर।
मुझे डुबाती अगम नीर में, क्यों तू निर्दय होकर?
निज नांव को तू तैराती, भेदभाव से परे होकर।
भरता क्यों नहीं तेरा जी, यूं क्रूर होकर।

हो गंभीर नदी फिर बोली, निज कर्मों का फल है।
कोई डूबे, कोई तैरे, निस्पृह रहता जल है।
जल पर नाव बिछा देती है, हृदय चीर कर अपना।
गूढ़ बना रहता है जब तू देख अहम का सपना।

सदा डुबाता औरों को, डूबे वह ना भला क्यों?
पार लगाती जो औरों को, हो ना उसका भला क्यों ?
सेवा का परिणाम मधुर है, जो तारक है वहीं तरता है।
अगम सिंधु में तुझ सा मारक, डूब डूब मरता है।

डूब रहे पत्थर ने पूछा ,सरिता से यूं रोकर।
मुझे डुबाती अगम नीर में, क्यों तू निर्दय होकर?

अक्षर त्रिपाठी
पीएच.डी. शोधार्थी,
सिविल अभियांत्रिकी विभाग

अपना दर्द

अपना दर्द अब किसको दिखाया जाए
उम्र भर इसे सीने से लगाया जाए

अदावते होती तो और बात थी यार
ये इश्क है इसे किस तरह छुपाया जाये

फोड़ने को सर अपना,चाहिए था पत्थर मुझे
तेरा संग ए दिल चलो आजमाया जाए

मोहब्बतें जताते जताते हो गया वो रुसवा
अब रोया जाए या फिर जश्न मनाया जाये

नजूमी बताता रहता है कयामत के दिन
उसे हाल, शब-ए-हिज्र का बताया जाए

कुछ कुछ मेरे जख्म भरने लगे हैं
क्या फिर तेरी बज्म में आया जाए?

तू बता क्या करूँ

भस्म कर के गुरुर अपना, करूं नित्य नवीन सृजन
या आकर वियोग में तेरे, कर दूँ नष्ट सम्पूर्ण गगन की
पी कर घूँट बिछोह का नीलकंठ का रूप धरुं
तू बता क्या करूँ, तू बता क्या करूँ

हिमाद्री की वादियों सा तेरा रूप सौम्य, कोमल
जैसे उग आई हो बुरांश में कोई नूतन कोपल
रहूँ तेरी चांदनी में,या योग अमृत में डूब मरुँ
तू बता क्या करूं, तू बता क्या करूं

प्राप्ति कर लेना बड़ा या त्याग महान
सम्मोहन तेरा बड़ा या बड़ा योग ध्यान
इन प्रश्नों की दौड़ में तेरे लिए कहाँ ठहरूँ
तू बता क्या करूं, तू बता क्या करूं

नारायण अधिकारी,
विधार्थी (एम.एस.सी.),
भौतिकी विभाग

दिल और अँधेरा

के गुम हो जाओ चाँद सितारों,
इस रात को काली होने दो ।।

जहाँ करो रोशन कोई दूजा,
बस मेरे मंजर पे पर्दा गिरने दो।।

बेमतलब दिलरुबा के इन्तजार में जागी,
मेरी इन गलियों को सोने दो ।।

के गुम हो जाओ चाँद सितारों,
इस रात को काली होने दो ।।

अरे!! मेरे हुजरे में रखदो धूल आस्मां की,
पर पूरा सन्नाटा होने दो ।
मैं करता हूँ सौदा मेरी बाकी रातों का,
बस आज तम तम तम तम होने दो ।।

के गुम हो जाओ चाँद सितारों,
इस रात को काली होने दो ।।

इतने अँधेरे से मेरे दिल का,
आज तस्सद्दुम होने दो
अँधेरे और अँधेरे में,
हम तुम अंतर देखे तो ।।

के गुम हो जाओ चाँद सितारों,
इस रात को काली होने दो ।।

अनिकेत मंगल (अधूरा).
विधार्थी (बी. टेक.),
कंप्यूटर विज्ञान एवं अभियांत्रिकी विभाग

उद्भव

यूँ ही नहीं हैं मनमर्जीयाँ मेरी,
यूँ ही नहीं खुदगर्ज हुई हूँ,
है लाख वजहों में एक यह भी,
किसी के कदर की मोहताज नहीं हूँ।

वो समझे नहीं पर हम समझाते रहे,
यूँ ही नहीं बस लाचार रही हूँ,
मैं ढह गई थी लहरों में जब,
तब जाकर तैराक हुई हूँ।

घर की चकाचौंध में छिपी दीपक की लौ और,
आपदा की हाहाकार हुई हूँ,
मैं थी जो कल तक मूंदी आखों में,
आज वो स्वप्न साकार हुई हूँ।

प्रतीक्षा सतपथी
मनोवैज्ञानिक परामर्शदाता
(प्रोजेक्ट स्टाफ),
मानविकी एवं समाज विज्ञान विभाग

थी ललाट पर खिंची भभूत शिव की,
और पार्वती के गले का हार हुई हूँ,
गगनचुम्बी विशालकाय पर्वत भी हूँ,
और सागर सा विस्तार हुई हूँ।

तुम जो चाहो ढूंढ लो मुझमे,
मैं "मैं" का सम्भार हुई हूँ,
अज्ञानता में पड़ी रह जाती,
खो जाती जड़-चेतन में कहीं,
मगर हालातों से उभरकर,
आज, कलाकार हुई हूँ।

है कितना जहरीला!

ओझल होते उम्मीदों का सिलसिला,
शहर से गांव जाता काफिला,
खाली पैर और रास्ता पथरीला,
तेज धूप और आग उगलता सूरज चमकीला,
जोर की प्यास और खाली पतिला,
पति का हाथ थामे चलती गर्भवती महिला,
नन्हें बच्चे का जमीन पर पांव पहीला,
हांफता कराहता बूढ़ा बाप रोगिला,
झुककर चलती मां का कंधा लचीला,
हाथों में बैग और सिर पर गठ्री बोझीला,
पसीने से लथपत गमछा है गीला,
चलना है मिलों और दूर है जिला,
थककर गोद में आ बैठा है बच्चा फुर्तीला,
पैरों में छाले और बदन पड़ गया है नीला,
टूटती, लचकती देश की आधारशिला,
अमीरों की मर्जी और सरकार की लीला,
हो रहा है जो कुछ भी, है कितना जहरीला।

उम्मीदों से बंधे उम्दा लोग,
कितने बेबस दिख रहे हैं जिंदा लोग।

राकेश कुमार "पंकज"
पीएच.डी. शोधार्थी,
मानविकी एवं
सामाजिक विज्ञान विभाग

विज्ञान और तकनीकी में हिन्दी क्यों नहीं ?

प्रायः कुछ लोग हिंदी भाषा के बारे में एकपक्षीय निर्णय करते हुए यह फैसला सुना देते हैं कि भारत में हिंदी की दशा और दिशा दोनों चिंतनीय है। क्या यही सच्चाई है? अंतरराष्ट्रीय संपर्क भाषा अंग्रेजी होने के बावजूद हिंदी भी धीरे–धीरे अपना अंतरराष्ट्रीय स्थान ग्रहण कर रही है। भारत की बढ़ती हुई अर्थव्यवस्था, बढ़ता हुआ बाजार, हिंदी भाषी उपभोक्ता, हिंदी सिनेमा, प्रवासी भारतीय, हिंदी का विश्वबंधुत्व भाव हिंदी को बढ़ाने में सहायक साबित हो रहे हैं। इसी कारणवश अब अंग्रेजी माध्यम के कई टीवी चौनलों को हिंदी भाषा में प्रस्तुतीकरण करना पड़ रहा है। हिंदी भाषा को विश्व पटल पर स्थापित करने के लिए संयुक्त राष्ट्र में हिंदी भाषा को सातवीं भाषा के रूप में स्थान दिलाना एक बड़ी चुनौती है। भाषा को आगे बढ़ाने के लिए राजनीतिक प्रतिबद्धता बहुत आवश्यक होती है। यह प्रयास अंतरराष्ट्रीय स्तर के साथ–साथ राष्ट्रीय स्तर पर भी प्रदर्शित की जाए, इसकी प्रबल आवश्यकता है। आज हिंदी केवल भारत, भारतीयों अथवा प्रवासी भारतीयों की भाषा ही नहीं है, अपितु कई विकसित , विकासशील देशों में भी हिन्दी भाषा अपना प्रभुत्व बनाये हुए है।

हम कह सकते हैं कि विश्व पटल पर हिंदी अपना प्रमुख स्थान बना रही है, लेकिन उसके सामने कई चुनौतियां भी हैं । ये चुनौतियां अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ही नहीं, राष्ट्रीय स्तर पर भी हैं । हिंदी की स्वीकार्यता बढ़ाना अभी भी एक अधूरा लक्ष्य बना हुआ है। हिंदी को जीवन के विविध क्षेत्रों जैसे विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान, तकनीक, विधि, अर्थशास्त्र, संचार विज्ञान और अन्य अनेक क्षेत्रों में समृद्ध करना अभी भी शेष है। क्या यह विडंबना नहीं कि देश की सबसे बड़ी अदालत (सर्वोच्च न्यायालय) में न्याय की भाषा हमारी अपनी नहीं? इसी तरह संसद में विधि निर्माण की भाषा भी मूलतः अंग्रेजी है। देश के उच्च शिक्षण संस्थानों में भी इसका प्रचलन कम ही है। प्रायः हिन्दी बोलने वाले संकोच की वजह से अन्य लोगों से पीछे रह जाते हैं।

दुनिया के लगभग सभी विकसित देशों ने अपनी भाषा में ही विज्ञान, तकनीक और चिकित्सा विज्ञान में पढ़ाई को महत्व दिया है। रूस, चीन , जर्मनी, जापान, फ्रांस जैसे सक्षम देशों में प्रारंभिक से लेकर उच्च शिक्षा की पढ़ाई उनकी अपनी भाषा में होती है। जब ये देश अपनी–अपनी भाषा का प्रयोग कर समर्थ बन सकते हैं तो हम क्यों नहीं बन सकते ? माना कि अंग्रेजी अंतरराष्ट्रीय भाषा है, लेकिन यह कहना न्यायोचित कैसे है कि वह प्रगति की भी भाषा है और इसके बिना हम सफल नही हो सकते ? इस समस्या को दूर करने का एक मात्र उपाय यही है कि उच्च शिक्षा का माध्यम भी हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषाओं में हो ताकि छात्रों और छात्राओं को अपनी सरल भाषा में शिक्षा मिले और उन्हें अंग्रेजी सीखने का अतिरिक्त मानसिक बोझ न पड़े। विज्ञान , अभियांत्रिकी, तकनीकी इत्यादि क्षेत्रों में इसकी आवश्यकता है । यह एक तथ्य है कि छात्रों का अच्छा–खासा समय अंग्रेजी सीखने में खप जाता है। यह समय के साथ ऊर्जा की बर्बादी है। यह बर्बादी इसलिए भी हो रही है कि अच्छी उच्च शिक्षा अंग्रेजी में ही उपलब्ध है।

यदि भाषा विचार का माध्यम है तो विचार की मौलिक प्रस्तुति के लिए मातृभाषा सर्वोत्तम है। हिंदी के हित के लिए हमें रोजमर्रा के अकादमिक और सरकारी कामकाज में हिंदी के सरल, सरस और सुबोध प्रयोग को बढ़ावा देना होगा। इसके लिए हिंदी पखवाड़े या दिवस पर भाषण, कविता, निबंध के आयोजन मात्र पर्याप्त नहीं हैं।

शोभित गुप्ता
विधार्थी (एम.एस.सी.),
भौतिकी विभाग

कलयुग के श्रीराम

कोटि कोटि प्रणाम तुम्हें, हे कलयुग के श्रीराम,
युग–युग की मेरी अभिलाषा पूरी करें भगवान।
तेरी पूजा नेता करते उनका घर भरते हो,
अफसर की तुम मदद करते, गुण्डों से डरते हो।
एसा नेता मुझे बना दो, जान सकल जहान,
युग–युग की मेरी अभिलाषा पूरी करें भगवान।

मैं भी तेरी पूजा करूँगा, नोट के फूल चढाऊँगा,
पूजा से तुम खुश होंगे तो बड़ा ओहदा पाऊँगा।
नाम लूँगा सोते जागते, तुम हो बड़े महान,
युग–युग की मेरी अभिलाषा पूरी करें भगवान।

तेरी भेंट मुझसे हो जाए, तो अण्डे चार खिलाऊँगा,
ऑफर करूँगा बढिया बीयर आपसे हाथ मिलाऊँगा,
थैंक यू मैं कहूँगा तुमको, तुम कृपा निधान,
युग–युग की मेरी अभिलाषा पूरी करें भगवान।

हेलीकॉप्टर जो मैं पा जाऊँ तुमको सैर कराऊँगा,
बाम्बे, दिल्ली कौन कहे मैं फॉरेन तक घुमाऊँगा,
हे प्रभु अर्पित है मेरी, तेरी सेवा में जान,
युग–युग की मेरी अभिलाषा पूरी करें भगवान।

वास है तेरा होटल क्लब में बड़ा शहर श्रीमान
आदर पाते हैं ये जैसे आये घर मेहमान,
बॉडीगार्ड है गुण्डे तेरे, पहरा देते एक समान,
सच्ची बात कहता हूँ, तुमसे चाहे मान–न–मान,
युग–युग की मेरी अभिलाषा पूरी करें भगवान।

ऋतभ किशोर
पीएच.डी. शोधार्थी,
यांत्रिकी अभियांत्रिकी विभाग

और हर दिन जड़ कमजोर होती है...

पूरे देश में भयावह वातावरण बन गया था। सभी अखबारों को दोबारा छापा जा रहा था। हमीर नमक इस देश के सर्वप्रिय प्रधानमंत्री का कत्ल कर दिया गया था। टेलीविजन के माध्यम से आई इस खबर को सुनकर सम्पूर्ण हमीर रो पड़ा। अब तो वहाँ की हवा में साँस लेना भी मुश्किल प्रतीत होता था। इस रात सो जाना किसी के लिए मुमकिन न था। मालवीय जी सेना के पाँच साल के शासन के बाद प्रधानमंत्री बने थे। किशोरीबाबू हमीर के एक छोटे से गाँव जमरात में स्थानीय सरकारी विद्यालय के निकट चाय की दुकान लगाते थे। घर गृहस्थी सब जमरात में ही था। बेटे को अभियांत्रिकी पढ़ने के लिए पास के गाँव रोहिणी के सरकारी कॉलेज में भेजा हुआ था। अक्षर कुलकर्णी स्थानीय विद्यालय के प्रधानाध्यापक थे। वह पंद्रह वर्ष सेना में कप्तान रह चुके थे। सुबह–सुबह अक्षर, पोस्टमॉस्टर, अध्यापकगण किशोरी के यहाँ चाय पीने आया करते थे। मालवीय जी की मौत ने अक्षर के भीतर बहुत गहरे घाव किए थे। अक्षर बैंच पर बैठकर अखबार पढ़ने लगे जिसे आज वह अपने साथ लेकर आए थे। किशोरी ने चाय उनके सामने रख दी और कुर्सियों पर कपड़ा मारने लगा। अखबार की खबर ने इतना क्रोधित कर दिया कि चेहरा लाल हो गया। तभी पोस्टमॉस्टर भी आ गया , अक्षर जी को प्रणाम किया और धीमे स्वर में बोला – " किसे चुना गया है ? " । अक्षर कुछ क्षण चुप रहे और धीमे से उत्तर दिया – " मनोहरलाल को " । यह सुनते ही पोस्टमॉस्टर के होश उड़ गए मानो पैरों के निचे से जमीन खिसक गई हो। पोस्टमॉस्टर बहुत गौर से खबर पढ़ने लगा। अन्य अध्यापकगण भी वहाँ आ गए। सभी ने अक्षर जी और पोस्टमॉस्टर को प्रणाम किया।अक्षर बोले – मुझे पहले ही शक था मालवीय जी की मृत्यु के पीछे मनोहर का हाथ है आज यकीन भी हो गया। सत्ता के लालच ने इस हिंसक मनुष्य को इतना नीचे गिरा दिया। पोस्टमॉस्टर बोले – मगर राष्ट्रीय जनता पार्टी (रा.ज.पा) राजेन्द्रनाथ , सुमन , कोहली किसी अन्य को भी तो चुन सकती थी। मनोहर को तो मालवीय जी पहले ही पार्टी से बाहर करने वाले थे। एक अध्यापक बोले – पोस्टमॉस्टर जी यह सब सत्ता का खेल है। धन और शक्ति के बल पर इस देश में कुछ भी प्राप्त किया जा सकता है। अक्षर – मगर मानवीय संवेदनाओं का क्या ? इस व्यक्ति ने भड़काऊ भाषणों से जातीय हिंसाएँ करवाई हैं। विद्यालय की घंटी बजने तक यह बातचीत चलती रही। मनोहर गुणहीन मनुष्य था, शक्ति का उपयोग करके उसने राजनीती में अपना दबदबा बनाया था। पूरा देश रा.ज.पा के इस कदम की कड़ी निंदा कर रहा था। मालवीय जी की मृत्यु की जाँच के लिए रमली के हाई कोर्ट के जज गुरदीप सिंह की अध्यक्षता में एक आयोग गठित किया गया। सुबह के समय अक्षर जी और अन्य अध्यापकगण किशोरी के यहाँ चाय पी रहे थे कि पोस्टमॉस्टर दौड़ते हुए आए और अक्षर जी की तरफ अखबार रखते हुए बोले – देखिए, पूरा पुलहामा जातीय हिंसा की आग में दहक रहा है। अक्षर खबर को गौर से पढ़ने लगे। पुलहामा हमीर का एक बड़ा राज्य था। पोस्टमॉस्टर बोले – झगड़ा डालरिया गाँव के निकट की जमीन को लेकर हुआ। सिखों का कहना है की कुछ फौजियों ने आकर उन्हें सूचना दी कि वह जमीन का केस जीत चुके हैं। इस कारण उन्होंने गुरूद्वारे की दीवार बनानी प्रारम्भ करी परन्तु मुसलमान इस पर भड़क उठे और पूरे पुलहामा में यह हिंसा आग की तरह फैल गई। अक्षर – मुझे पहले ही हिंसा भड़कने का डर था। उम्मीद है सेना जल्द ही स्तिथि पर काबू पा लेगी।आग हमीर में फैलने लगी थी तभी पडोसी देश हाइमा की तरफ से फराहम में घुसपैठ की खबरें आने लगी। स्तिथियाँ और अधिक बिगड़ गई जब सिंह आयोग ने छह माह बाद जाँच की रिपोर्ट दी। रिपोर्ट में लिखा था कि सेना के कुछ प्रमुख नायको की मालवीय जी की मृत्यु में मुख्य भूमिका रही है एवं उनसे पूछताछ की आवश्यकता है। सेना का हर जवान देश के नागरिको की रक्षा के लिए मर मिटने को तैयार रहता हैं परन्तु अगर देश के नागरिक उस पर विश्वास न करे तो उसकी सारी हिम्मत खत्म हो जाती है। सब किशोरी के यहाँ चाय पी रहे थे आज अखबार की खबर पढ़कर अक्षर के आँखों में आँसू आ गए , लिखा था – " और हर दिन जड़ कमजोर होती जाती है..." ।नागरिक मानवीय सद्गुणों को भूलते चले जा रहे थे। हमीर को जाने किस की नजर लग गई थी। पूरे हमीर में बंद का ऐलान कर दिया गया था परन्तु अब स्तिथि काबु आने वाली न थी ,भाषण सुनकर लोग इतने अंधे हो चुके थे कि भीड़ में सेना पर पत्थरबाजी करने लगते थे। मगर एक सच्चा देशभक्त अपने देश को टूटते हुए नहीं देख सकता। अक्षर जानते थे देश के पास अगर सेना के बाद कोई पूँजी है तो वह है देश के छात्र , देश के भविष्य। अब शिक्षित छात्र ही देश को टूटने से बचा सकते थे। अक्षर ने किशोरी के लड़के अमन से मुलाकात की और उसे देश के सभी कॉलेजो , शिक्षा संस्थानों के छात्र संगठनो के अध्यक्षों की संपर्क जानकारी एकत्रित करने का कार्य सौंपा। उनका काम था सभी संगठनों को जोड़ना और इसके द्वारा आम जनता में मानवीय सद्गुणों का संचार करवाना। अमन ने दो दिनों में ही संपर्क हेतु जानकारी इकट्ठी कर ली। इस संगठन में भिन्न–भिन्न जाति और प्रान्त के नवयुवक थे। नवयुवक जाति और प्रान्त के आधार पर छोटी–छोटी टुकड़ियों में बाँट दिए गए और सेना के नेतृत्व में उन्हें पीड़ित इलाकों में आपसी प्रेम के फूल खिलाने भेज दिया गया। यह कदम बहुत लाभप्रद साबित हुआ। अक्षर के यह नए जवान घर–घर जाकर , नाटकों के माध्यम से लोगो को शांत करने में सफलता प्राप्त कर रहे थे। देश का मीडिया भी अब इस फौज में शामिल था। मनोहर और अन्य हिंसा भड़काने वाले नेताओं को घर में नजरबंद कर लिया गया। हमीर पुनर्जन्म ले रहा था।आज सब किशोरी के यहाँ बैठे है सभी खुश हैं मगर अक्षर इनके साथ नहीं हैं, उन्हें देश ने प्रधानमंत्री के पद के लिए चुन लिया है।

नानक बत्रा
विधार्थी (बी. टेक.),
सिविल अभियांत्रिकी
विभाग

नवनियुक्त कर्मचारिगण

श्री नवीन कुमार
कनिष्ठ लेखा अधिकारी

श्री करमवीर सिंह
कनि. सहायक लेखा

श्री दमनिंदर सिंह
कनि. तकनीकी अधीक्षक

श्री समनेन्द्र सिंह
कनिष्ठ अधीक्षक

सुश्री नबनीता चक्रबर्ती
कनिष्ठ अधीक्षक

श्री अनुज बब्बर
कनि. प्रयो. सहायक

श्री अमित रावत
सहा. सुरक्षा अधिकारी

श्री गगनदीप सिंह
कनि. सहायक लेखा

सुश्री निधि सिन्हा
कनि. सहायक लेखा

श्री रामबीर सिंह
कनि. तकनीकी अधीक्षक

श्री गौरव दत्ता
कनि. लेखा अधिकारी

श्री सचिन मिश्रा
कनि. प्रयो. सहायक

पदोन्नति हेतु अभिनंदन

हिंदी प्रकोष्ठ, भा.प्रौ.सं. रोपड़ श्री रविंदर कुमार (वरि. सहायक लेखा), श्री दिवाकर शर्मा (वरिष्ठ सहायक), श्री दलजीत सिंह सैनी (वरि. सहायक लेखा), सुश्री पूनम कटारिया (वरिष्ठ सहायक) तथा डॉ. गिरीश प्रमोदराव कठाणे (हिंदी अनुवादक) का पदोन्नति हेतु अभिनंदन करता है।

नवनियुक्त संकाय सदस्य

डॉ. कौशिक मण्डल
सहायक प्राध्यापक
गणित विभाग

डॉ. सुदीप्ता मिश्रा
सहायक प्राध्यापक
कंप्यू. विज्ञान एवं अभि.

डॉ. सैकत रॉय
सहायक प्राध्यापक
रासायनिक अभि.

डॉ. अभिषेक शर्मा
सहायक प्राध्यापक
विद्युत अभि.

डॉ. इंद्रामनी दादा
सहायक प्राध्यापक
सिविल अभि.

डॉ. प्रदीप दुहान
सहायक प्राध्यापक
विद्युत अभि.

डॉ. सारंग प्रकाश गुंफेकर
सहायक प्राध्यापक
रासायनिक अभि.

डॉ. अभिषेक तिवारी
सहायक प्राध्यापक
धातु. एवं पदा. अभि.

डॉ. देबदीप सरकार
सहायक प्राध्यापक
विद्युत अभियांत्रिकी

संरक्षक संपादक
प्रो. सरित कुमार दास,
निदेशक, भा.प्रौ.सं. रोपड़

परामर्शदाता संपादक
डॉ. अरविंद कुमार गुप्ता,
संकाय प्रभारी (हिंदी)
श्री लगवीश कुमार,
हिंदी अधिकारी तथा उपकुलसचिव, भा.प्रौ.सं. रोपड़

संपादक
डॉ. गिरीश प्रमोदराव कठाणे,
हिंदी अनुवादक, भा.प्रौ.सं. रोपड़

अभिकल्प, प्रकाशन एवं मुद्रण
सुश्री प्रीतेंदर कौर,
जनसंपर्क अधिकारी, भा.प्रौ.सं. रोपड़
संपादन सहयोग
श्री ऋतभ किशोर
छात्र समन्वयक (संगम पत्रिका),
पीएच.डी शोधार्थी, यांत्रिकी अभि. विभाग
भा.प्रौ.सं. रोपड़